सीआईएस

सत्रीय कार्य

सत्र: जनवरी एवं जुलाई 2018

रेशम कीट पालन में प्रमाणपत्र कार्यक्रम (सीआईएस)

(केंद्रीय रेशम बोर्ड, वस्त्र मंत्रालय (भारत सरकार) के सहयोग से विकसित)

कृषि विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
नई दिल्ली–110068

कृषि विद्यापीठ

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

मैदानगढ़ी, नई दिल्ली–110068

सत्रीय कार्य जमा कराने की अंतिम तिथि

पाठ्यक्रम कोड	पीएससी में सत्रीय कार्य जमा कराने की अंतिम तिथि	
	जनवरी 2018 सत्र	जुलाई 2018 सत्र
बीएलपी 001	15 फरवरी 2018	16 अगस्त 2018
बीएलपीआई 002	28 फरवरी 2018	31 अगस्त 2018
बीएलपीआई 003	15 मार्च 2018	15 सितम्बर 2018
बीएलपी 004	28 मार्च 2018	27 सितम्बर 2018

नोट :

- कृपया, अपना सत्रीय कार्य उपरोक्त तिथि के अनुसार अपने अध्ययन केन्द्र / पीएससी में जमा कराए।

- परीक्षा फार्म जमा कराने से पहले (मार्च और सितम्बर में क्रमशः जून और दिसम्बर सत्रांत परीक्षा हेतु), अनिवार्य है कि आप जिन पाठ्यक्रमों की परीक्षा दे उनसे संबंधित सत्रीय कार्य जमा करायें और कार्यक्रम प्रभारी या अध्ययन केंन्द्र / पीएससी के संयोजक से प्रमाणीकरण करायें।

प्रिय शिक्षार्थी,

"रेशम कीट पालन में प्रमाणपत्र (सीआईएस) कार्यक्रम" में आपका स्वागत है।

आशा है कि आपने सीपीएफ कार्यक्रम मार्गदर्शिका को अच्छे से पढ़ लिया होगा। सत्रांत परीक्षा (TEE) की अधिभारिता - 80% और सतत् मूल्यांकन (सत्रीय कार्य) की 20% होगी। सैद्धांतिक घटक के साथ प्रत्येक पाठ्यक्रम के लिए एक सत्रीय कार्य है अर्थात् कार्यक्रम में सम्मिलित पाठ्यक्रमों (बीएलपी 001, बीएलपीआई 002, बीएलपीआई 003 और बीएलपी 004) के लिए 4 सत्रीय कार्य हैं। प्रत्येक सत्रीय कार्य 50 अंकों का है जो कि अंततः, सैद्धांतिक घटक की 20% अधिभारिता में परिवर्तित होगा। शिक्षार्थियों को सलाह दी जाती है कि आप सर्वप्रथम अध्ययन सामग्रियों का अध्ययन करें और तत्पश्चात् निर्देशों को ध्यान में रख कर सत्रीय कार्य प्रतिक्रिया तैयार करें। आपकी प्रतिक्रियाएं स्व–अध्ययन उद्देश्यों के लिए प्रदत्त पाठ्यपुस्तक सामग्री/खंडों की ज्यों की त्यों नकल नहीं होनी चाहिए। अपनी सत्रीय कार्य प्रतिक्रियाएं निर्धारित तारीख या इससे पहले तक अपने अध्ययन केंद्र/कार्यक्रम अध्ययन केंद्र (पीएससी) में जमा करा दें। सत्रीय कार्यों का मूल्यांकन अध्ययन केंद्र/पीएससी के परामर्शदाताओं द्वारा किया जायेगा और प्राप्त अंकों की अधिभारिता सत्रांत परीक्षा में प्राप्त अंकों के प्रतिशत में जोड़ दी जायेगी। सत्रांत परीक्षा में बैठने के लिए प्रत्येक शिक्षार्थी को सत्रीय कार्य पूरा करना होगा। इसलिए अपने सत्रीय कार्यों को सजगता से लें और समय पर जमा करायें।

सामान्य निर्देश

1. यदि आप किसी सामान्य निर्देश सत्र की देय तारीख से पहले सत्रीय कार्य जमा नहीं करा पाते तो आपको आगामी सत्रों के सत्रीय कार्य के नये सेट को पूरा करना होगा।
2. अपनी उत्तर पृश्ठिका के पहले पृश्ठ के सबसे ऊपर दाये कोने में अपनी नामांकन संख्या, नाम, पूरा पता और प्रेशण की तारीख लिखें।
3. अपनी उत्तर पृश्ठिका के पहले पृश्ठ के बायें कोने में कार्यक्रम, शीर्शक, पाठ्यक्रम शीर्शक, सत्रीय कार्य कोड, अध्ययन केंद्र कोड के स्थान का उल्लेख करें।

प्रत्येक सत्रीय कार्य के लिए आपकी उत्तर पृश्ठिका के पहले पृश्ठ के सबसे ऊपर का भाग इस तरह होना चाहिएः

पाठ्यक्रम शीर्शक	नामांकन संख्या ....
कार्यक्रम कोड	नाम ....
अध्ययन केंद्र का कोड	पता ....
(स्थान)	तिथि ....

नोट : उपर्युक्त फार्मेट का अनुसरण कड़ाई से करें।

4. आपकी उत्तर पृश्ठिका हर नज़रिए से पूरी होनी चाहिए। सुनिश्चित करें कि सत्रीय कार्य जमा कराने से पहले आपने सत्रीय कार्यों के सभी प्रश्नों के उत्तर दिए हैं। अधूरे उत्तर खराब अंक देंगे।
5. जहाँ तक संभव हो पाठ्यक्रम सामग्री के प्रासंगिक बिंदुओं का उल्लेख करें और पाठ्य सामग्री की ज्यों की त्यों नकल लिखने की बजाय अपने उत्तर अपने शब्दों में खोल कर लिखें।
6. सत्रीय कार्य करते समय अध्ययन सामग्री की नकल न मारें। देखा गया है कि सत्रीय कार्यों को पूरा करने के लिए अध्ययन सामग्री की नकल मारी जाती है और इसके लिए शून्य अंक मिलेगा।
7. अन्य शिक्षार्थियों की उत्तर पृश्ठिकाओं से नकल न मारें। यदि ऐसा पाया जाता है तो संबद्ध शिक्षार्थियों के सत्रीय कार्यों को खारिज़ कर दिया जाएगा।
8. अपने उत्तर फुलस्केप साइज़ पेपर पर ही लिखें। सामान्य लेखन पत्र, न अधिक मोटे या पतले, ही कारगर होंगे। सत्रीय कार्य अनिवार्यतया हस्तलिखित ही हों। टंकित सत्रीय कार्य स्वीकार्य नहीं होंगे।
9. प्रत्येक सत्रीय कार्य में बाये और 3 इंच का मार्जन और प्रत्येक उत्तर की समाप्ति के बाद 4 पंक्तियों का फासला देना जरूरी है। प्रत्येक उत्तर की प्रश्न संख्या साफ तरीके से लिखें। सत्रीय कार्य करते समय, कृपया निर्देशों को सावधानीपूर्वक पढ़ें।
10. आपके अध्ययन केंद्र/पीएससी के संयोजक आपके मूल्यांकित सत्रीय कार्य आपको लौटा देंगे। सत्रीय कार्यों में आपके निश्पादन पर मूल्यांकन की संपूर्ण टिप्पणियाँ वाली मूल्यांकन पृश्ठिका की प्रति भी सम्मिलित होगी। इससे आप भावी सत्रीय कार्यों एवं सत्रांत परीक्षाओं को अधिक बेहतर तरीके से करने के योग्य होंगे।
11. सत्रीय कार्य अपने अध्ययन केंद्र/पीएससी कार्यक्रम प्रभारी/संयोजक को भेजें।

सत्रीय कार्य करने से पहले निर्देशों को सावधानीपूर्वक पढ़ें।

कार्यक्रम की सफलता हेतु हमारी शुभकामनाएं!

सुखद अध्ययन!

कार्यक्रम संयोजक (सीआईएस)

बीएलपी 001 : रेशम उत्पाद का परिचय

कुल अंक : 50

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान है। (5x10=50)

1. भारत में पोशित रेशमकीटों की चार किस्मों के नाम लिखिए। रेशमकीट प्रजातियों, परपोशी पादप, भारत में रेशम उत्पादन में इनके योगदान और रेशम उत्पादित राज्यों को ध्यान में रख कर, इनका सविस्तार वर्णन कीजिए।
2. रेशमकीट के जीवन चक्र को रेखाचित्र की सहायता से समझाइए।
3. रेशम उत्पादन, अन्य किसी कृशि फसल की तुलना में थोड़े समय में ही अधिक धन देता है? अपने शब्दों में कथन की पुश्टि कीजिए।
4. रेशम उत्पादन उद्योग में सम्मिलित मुख्य लाभार्थियों की पहचान कीजिए। इनकी भूमिकाओं का वर्णन कीजिए।
5. रेशम उत्पादन उद्योग में मानव संसाधन विकास में विभिन्न संगठनों/संस्थानों की भूमिका का वर्णन कीजिए।
6. रेशम उत्पादन उद्योग में उपलब्ध विभिन्न व्यवसाय अवसरों की सूची बनाइए।
7. मादा एवं नर प्यूपा के अंतर को स्पश्ट कीजिए। रेशमकीट प्यूपा के लिंग पृथक्करण में सम्मिलित चरणों का वर्णन कीजिए।
8. अबद्ध (loose) अंडा उत्पादन में सम्मिलित विभिन्न चरणों का वर्णन कीजिए।
9. रेशमकीट डिम्भक संबंधी कूड़ा–कचरे का उपयोग उत्कृश्ट जैविक खाद एवं पशु चारे के रूप में किया जा सकता है। पुश्टि कीजिए।
10. परिभाशित कीजिएः
    - क) धागाकरण
    - ख) स्टिपलिंग
    - ग) ब्रशिंग
    - घ) रे ाम गट्ठी को बनाना
    - च) विगोंदन

बीएलपीआई 002 : पोषक पौधे की कृषि

कुल अंक : 50

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान है। (5x10=50)

1. पौधशाला निर्माण की प्रक्रिया का वर्णन कीजिए।
2. काट–छाँट को परिभाशित कीजिए। शहतूत की खेती में काट–छाँट संबंधी किन विभिन्न विधियों का चलन है? वर्णन कीजिए।
3. चाकी शहतूत बागान में फसल कटाई संबंधी समयसूची क्या है?

4. मशीनीकरण को परिभाशित कीजिए। इसके लाभ क्या हैं? रेशम उत्पादन में मशीनीकरण का क्षेत्र विस्तार क्या है?
5. शहतूत के बागानों में रासायनिक अनुप्रयोग में प्रयुक्त मशीनों को सूचीबद्ध कीजिए। इनका सविस्तार वर्णन कीजिए।
6. उत्तर भारत में शहतूत की पत्तियों के परिवहन एवं संरक्षण की किस विधि का चलन है? वर्णन कीजिए।
7. पूरब/उत्तर पूर्वी भारत में सिंचाई, मृदा नमी संरक्षण और खरपतवार संबंधी किन विधियों का चलन है? वर्णन कीजिए।
8. तसर खाद्य पादपों के लिए मृदा उर्वरता प्रबंधन का वर्णन कीजिए।
9. मूगा खाद्य पादपों का संचरण कैसे किया जाता है? सविस्तार वर्णन कीजिए।
10. टैपियोका की खेती की विधि का वर्णन कीजिए।

बीएलपीआई 003 : रेशमकीट पालन

कुल अंक : 50

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान है। (5x10=50)

1. मूगा रेशमकीट के जीवनचक्र को रेखाचित्र की सहायता से समझाइए।
2. विसंक्रमण क्या है? रेशमकीट पालन गृह और प्रयुक्त उपकरणों की विसंक्रमण प्रक्रिया का वर्णन कीजिए।
3. आदर्श रेशम कीट पालन गृह की विशेशताएं क्या हैं?
4. रेशम कीट अंडों की ब्लैक बॉक्सिंग की प्रक्रिया का वर्णन कीजिए।
5. चाकी रेशमकीट पालन संबंधी व्यवहारों का संक्षेप में वर्णन कीजिए।
6. वयस्क रेशम कीट पालन की विभिन्न विधियों को सूचीबद्ध कीजिए। किसी एक विधि को विस्तार से लिखिए।
7. वयस्क रेशमकीट पालन में कौन सी विभिन्न आरोपण (mounting) विधियों का चलन है? वर्णन कीजिए।
8. ऐरी रेशमकीट की ऊश्मायन, ब्रशिंग एवं पालन की प्रक्रिया का वर्णन कीजिए।
9. परिभाशित कीजिए :
   - क) विलोमकन
   - ख) डुपिओन
   - ग) रेंडिटा
   - घ) पतले कवच वाला कोया
   - च) कवच अनुपात (%)
10. लाभ–अलाभ बिंदु की संकल्पना का वर्णन, रेखाचित्र की सहायता से कीजिए।

बीएलपी 004 : फसल सुरक्षा/बचाव

कुल अंक : 50

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान है। (5x10=50)

1. मूल गांठ रोग के रोगकारक, रोग उत्पत्ति अवधि, फसल हनन, लक्षण और नियंत्रण संबंधी उपायों का वर्णन कीजिए।
2. फफूँदनाशी छिड़काव से पहले, दौरान और बाद में बरती जाने वाली सावधानियाँ कौन सी हैं?
3. शहतूत में निम्नलिखित पीड़क ग्रसन के होने की अवधि और किसी एक विशिश्ट संकेत/लक्षण को लिखिए :
   क) चूर्णी मत्कुण
   ख) जैसिड
   ग) बिहारी हेरी इल्ली
   घ) तना छेदक
   च) थ्रिप्स
4. शहतूत की खेती में पीड़क प्रकोप के लिए उत्तरदायी कारकों को लिखिए।
5. फलेचरी रोग के रोगकारक, इसकी उत्पत्ति अवधि, स्त्रोत, संक्रमण मार्ग, लक्षणों एवं प्रबंधन को लिखिए।
6. रेशमकीट पालन के दौरान अनुसरणीय स्वास्थ्यकर व्यवहारों का वर्णन कीजिए।
7. यूज़ी मक्खी के नियंत्रण एवं प्रबंधन हेतु किन विभिन्न विधियों का चलन है? वर्णन कीजिए।
8. मूगा रेशमकीट परपोशी पादपों में रेड रस्ट रोग के रोगकारक, रोग उत्पत्ति की अवधि, क्षति, लक्षण, नियंत्रण संबंधी उपायों को लिखिए।
9. निम्नलिखित रोगों की उत्पत्ति अवधि और इनके किसी एक विशिश्ट लक्षण/ संकेत को लिखिए :
   क) तसर रेशमकीट में माइक्रोस्प्रोडियोसिस संबंधी रोग
   ख) मूगा रेशमकीट में मसकार्डिन
   ग) ऐरी रेशमकीट में पेब्रिन
   घ) ओक तसर रेशमकीट में जीवाणु निरोधकता
   च) ऐरी रेशमकीट में ग्रेसिरी
10. तसर रेशमकीट के महत्वपूर्ण परभक्षियों को सूचीबद्ध कीजिए। किसी एक को सविस्तार लिखिए।